वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

मई – 2022

❖ आत्म–बोधी होने की कुछ पूंजी

❖ मनुष्य की कदर और कीमत कहाँ है?

❖ एक अनोखा उपहार

❖ एक मां के प्रति श्रद्धांजली

❖ ईतवार की सभा

❖ भृत्य स्वामी के सम्बन्ध में

❖ शुभ संग्राम

❖ नेकी ही घर, देश और दुनिया .....

बेटी मैं तुम्हारी रक्षा के लिए हाज़िर हूँ

श्रीमान् नेता सिंह जी का नाम किस ने नहीं सुना? जब भगवान् देवात्मा को जेल में पहुंचाने के लिए पिशाच जन सिर तोड़ यत्न कर रहे थे, और सरदार साहिब श्रीमान जमीयत सिंह जी पिशाच आत्माओं को हरा देने के लिये एक फ़रिश्ते की न्याईं एक कोर्ट में पहुंचे, तब श्री० सरदार नेता सिंह जो भी उनके साथ थे। उस समय खुल्लम खुल्ला भगवान् देवात्मा का साथ देना कोई साधारण बात न थी। किन्तु उसके लिए असाधारण बल की आवश्यकता थी। यह श्री० सरदार नेता सिंह जी सारी उमर भगवान् देवात्मा के वफ़ादार सेवक रहे। उनके जीवन की एक स्मरणीय घटना है, कि एक बार वह महोत्सव पर आ रहे थे। एक स्टेशन पर उन्होंने देखा कि एक लड़की खड़ी है, और वह घबराई हुई है। पिता का रूप रखने वाले श्री० नेता सिंह जी ने लड़की से पूछा, कि तुम्हें क्या तकलीफ़ है। उसने उत्तर दिया, कि मैं अकेली हूं और इस समय मेरा कोई रक्षक नहीं। श्री सरदार नेता सिंह जी तत्काल गाड़ी से उत्तर गए और कहा, कि अब मैं तुम्हारा रक्षक हूँ, मैं तुम्हें घर पहुंचा कर फिर आगे जाऊँगा और उन्होंने ऐसा ही किया। उस असहाय लड़की को अपने पवित्र जीवन का सहारा दिया। उस लड़की को उसके घर पहुंचा कर ही वह महोत्सव पर पहुँचे। देव समाज के यात्रियों को जब इस घटना का पता लगा, तब उस महोत्सव के पवित्र मंडल में एक पवित्र लहर पैदा हो गई और सब खुशी और उत्साह से भर गए और श्री० सरदार नेता सिंह जी को धन्यवाद देते रहे, कि उन्होंने अपने जीवन की घटना के इस दृष्टांत से देवसमाज का गौरव दुगना कर दिया।

- *किसी जन में जितना अहं अनुराग बढ़ा हुआ होता है, उतना ही वह अपनी मर्जी पूरी करना चाहता है। ऐसा जन अपनी किसी नीच रूचि चोट लगने से झुंझला उठता है। जिस प्रकार एक-2 बच्चा दिन रात अपनी माता की सेवा पाकर भी तत्काल उससे फट जाता है, जब कोई काम बच्चे की मर्ज़ी के खिलाफ करना चाहती है।*
- *नेचर स्वेच्छाचारी जन को तबाह कर देती है :- उसका नष्ट होना लाज़मी है।*

- देव वाणी

धर्म जीवन

खण्ड 33 अंक 5
मई – 2022
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

आत्म – बोधी होने की कुछ पूंजी

देव धर्म की सारी शिक्षा आत्मा के भले पर आधारित है। आत्मा की रक्षा और विकास मनुष्य जीवन का मुख्य लक्ष्य है। इसलिए आत्म बोध का मनुष्य जीवन में विशेष महत्व है।

आत्मा की हानि, आत्मा के पतन का बोध ही आत्म बोध होता है। इस बोध के बिना मनुष्य जीवन सफल नहीं हो सकता। उसका मुख्य लक्ष्य सिद्ध नहीं हो सकता। हृदय के एहसासों का आत्मा की होश वा सोझी से गहरा सम्बन्ध है। यदि हम अपने एहसासों के विषय में जान लेते हैं, तो कुछ और नियम पूरे करके आत्म बोध प्राप्ति की सम्भावना हो सकती है।

देव धर्म की विशेष सत्संग के वातावरण से प्रभावित होकर मनुष्य को अपने पूजा, पाठ, आराधना सम्बन्धी मोटे मिथ्या विश्वासों से और मोटे मोटे पापों से छुटकारा मिल जाता है और वह अद्वितीय आर्विभाव देवात्मा का सेवक बनने का अधिकार प्राप्त कर लेता है।

थोड़े सेवकों को सत्संग के महत्व का एहसास होता है, जो उसके साथ सदा जुड़े रहना बहुत आवश्यक समझते हैं। जिन जनों को सभाओं और सत्संग में जाना आवश्यक महसूस होता है, कीमती लगता है, सौभाग्य लगता है, उनकी आत्मिक उन्नति की सम्भावना हो सकती है। जो सभा साधनों को कभी छोड़ना नहीं चाहते, सदा उनमें हाज़िर रहकर लाभ उठाना चाहते रहते हैं, बल्कि अपने पारिवारिक जनों को भी इससे लाभ उठवाना चाहते हैं, उनका और भला होने की आशा हो सकती है।

धर्म समाज के वातावरण का वा बाहर के वातावरण का ज़मीन आसमान का अन्तर है। बाहर का वातावरण कोयले की गैस की तरह मनुष्य को आत्मिक पक्ष में सुला देता है। आम सेवकों को अधिकतर बाहर के वातावरण में ही गुजरना पड़ता है, काम धन्धे, आने जाने वाले, तरह - तरह के सम्बन्धियों को मिलने, और पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति में वह सभा साधन बिसार बैठते हैं, सभा साधनों से एक - एक सेवक से लाभ नहीं उठाया जाता, दूसरों ने तो क्या लाभ उठाना था। ऐसे ही हालातों में घिरे रहकर हमारे हृदय के एहसास बताएंगे कि हम कितने आत्म उन्नति के इच्छुक बन

सकते हैं।

यदि हमें घर के कामों को करके, ब्याह शादियों में शामिल होकर, सभा साधन वा उत्सव बिसार कर ही तृप्ति मिलती है, खुशी मिलती है, तो और उन्नति की सम्भावना कम ही होती है। यदि हमें सभा साधन वा उत्सव याद रहें, वहां पहुंचने का घाटा महसूस होता रहे, और न पहुंचने में अपना आप अभागा होने का एहसास हो, दुःख महसूस हो, पछतावा महसूस हो, अपने आप पर कुछ शर्म आती हो, तो भले की अधिक सम्भावना हो सकती है।

परिवर्तन का नियम अटल है, यह हमारे भावों पर पूरा हावी है। भावों को लेकर हमारी गतियां होती हैं। भावों के बढ़ने घटने से, हमारी गतियां बढ़ती वा घटती रहती हैं। इस परिवर्तन का एहसास बड़ा ही कीमती है। यह एहसास हमारे उच्च अधिकारी होने के लक्षण हैं।

कई सेवकों को भजन अच्छे लगते हैं। वह भजन सुनकर वा स्वंय गुनगुना कर खुश रहते हैं। परन्तु समय के साथ, सांसारिक संगत में रहते वह भी भूल जाते हैं। कुछ समय बाद उन्हें यह एहसास होता है कि एक अच्छा अभ्यास उन्होंने छोड़ दिया है, इस पर उनकी क्या प्रतिक्रिया होती है?

यदि हम पहले उच्च ग्रन्थों का पाठ करके खुशी अनुभव करते थे, उससे लाभ उठाते थे, सांसारिक कामों में वह भूल गए हैं, उसके न होने से हम कितना दुःख महसूस करते हैं? पहले दूसरों को गुरु महाराज की महिमा सुनाते थे, उनसे मोटे पाप छुड़वाते थे, वह अब नहीं करते।

हम अपने बड़ों, अपने माता - पिता के चरणों में सिर रखकर प्रणाम करते थे, वह प्रणाम घट गया है, या अधूरा रह गया है, या केवल रस्म के रूप में रह गया है।

हम समाज की, किसी मन्दिर की, या संस्था की कोई सेवा करके खुश होते थे। किसी कर्मचारी वा उपकारी की सेवा करते थे, वह अब छोड़ दी है, क्या वह समय पाकर कुछ याद आती है, यदि याद आती है, तो हृदय में क्या प्रतिक्रिया होती है?

कोई दान करते थे, अब नहीं करते और न कोई आवश्यकता अनुभव करते हैं, पहले हम अपने नीच जीवन पर विचार करते थे, उसको लिखते थे, अब वह साधन नहीं करते, पहले गुण चिन्तन वा उपकार स्मरण करते थे, उसमें रस आता था, अब वह साधन छूट गया है: पहले निन्दा नहीं करते थे, निन्दा करते हुए हमारी जुबान रुक जाती थी, अब पता ही नहीं लगता कि जोश से भरकर निन्दा करते रहते हैं।

इसी प्रकार पहले की हुई उच्च गतियां किसी समय याद आकर हमारे पर क्या असर करती हैं, क्या हम उनको छोड़कर कोई घाटा महसूस करते हैं या फिर हंस छोड़ते हैं। या इन उच्च गतियों की याद हमें जोर से हिलाती है, अपने भीतर आया नीच परिवर्तन हमें खटकता है, हमें घाटा अनुभव होता है, दुःख दर्द होता है, शर्मसारी अनुभव होती है, फिटकार पड़ती है, तो हम सौभाग्यवान हैं,

हमारे भले की कुछ गुंजाईश है।

समय के अनुसार हमारे भावों की पूंजी बढ़ती या घटती रहती है, क्या हमें इसका भी एहसास है?

हमारी श्रद्धा और उसके सम्बन्ध में हमारी गतियां परिवर्तित होती रहती हैं। हमारी कृतज्ञता भी बढ़ती घटती रहती है। हमारी हमदर्दी वा सेवा के भाव भी इस सम्बन्ध में गतियां करके बढ़ते हैं नहीं तो घटते रहते हैं। हमारा गुस्सा भी या बढ़ रहा है या घट रहा है। क्या हमें उपरोक्त भावों का घटना या बढ़ना दिखाई देता है, अखरता है, महसूस होता है?

जिनको अपने भावों का बढ़ना वा घटना दिखाई देता है, महसूस होता है, अखरता है, वह बहुत सौभाग्यशाली हैं। उनके कल्याण की सम्भावना है।

ऐसे जन ही आगे जाकर आत्म बोध की प्राप्ति के भी अधिकारी हो सकते हैं। उनके जीवन की सफलता की आशा है।

हमारी उच्च या नीच गतियां हमारे आत्मा की नब्ज हैं। उनसे साफ संकेत मिलता है कि हम वा हमारा आत्मा किधर को जा रहे हैं, जो अपने आत्मा की नब्ज पहचानते हैं, उसके ऊपर पहरे की आंख रखते हैं, उनके भले की कुछ उम्मीद हो सकती है, जो अपनी गतियों को नहीं देख सकते, चौकस नहीं रहते, सचेत होकर नहीं चलते, बेपरवाह वा खुश प्रसन्न रहते हैं, उनके भले की, आत्म रक्षा की आशा बहुत कम होती है। आत्म बोध का दर भी उनके लिए बन्द हो जाता है।

एक महोत्सव पर हम तैयारियों में लगे हुए थे। उच्चलोकवासी श्रीमान गुरुवन्त सिंह जी हमारे साथ लगे हुए थे। अन्दर कमरों में पराली बिछा रहे थे। उक्त श्रीमान जी को धूल मिट्टी से खांसी आने लगी। हमारे में से एक सेवक ने कहा कि श्रीमान जी को X-Ray करवाना चाहिए। वह बाज़ार से पान के पत्ते की जड़ भी श्रीमान जी के लिए लेकर आए। अगले दिन भी खांसी उठती रही। मैंने श्रीमान जी को X-Ray करवाने के लिए विनती की। श्रीमान जी हंस पड़े, परन्तु महोत्सव से खाली होकर X-Ray करवाया तो उनके छक्के छूट गए। वह फिकर से सारी रात सो नहीं सके, क्योंकि डॉक्टर ने उन्हें जल्दी ही सैनीटोरियम में जाकर ईलाज करवाने की सलाह दी, उनके फेफड़े रोगी हो चुके थे, उन्होंने फिर बड़ी सावधानी से ईलाज करवाया। इसी प्रकार आत्मा के X-Ray की आवश्यकता है। अपने भावों के विषय में जानने की आवश्यकता है।

एक बार ठोस साधक श्रीमान गुरुबख्श सिंह जी ने पराए खेत में खड़े-खड़े एक सरसों की गंदल मुंह में डाल ली। साथ ही ख्याल आया कि यह खेत किसी का है। अपने स्वार्थपूर्ण व्यवहार पर इतना दुःख हुआ कि वह मुंह पर थप्पड़ मारने लगे कि यह मैंने क्या कर दिया। देवात्मा की रोशनी में ही हम अपने भावों को देख सकते है। इस रोशनी में हम अपने व्यवहारों को देख सकते हैं।

इस प्रकार अपनी गतियों पर पहरे की आंख रखने वाले, चौकस रह सकने वाले जरूर अपनी योग्यतानुसार अपने आत्मा का भला कर जाते हैं।

(बलदेव सिंह)

मनुष्य की कदर और कीमत कहाँ है?

पिछली सदी की एक कथा है कि जो मैंने एक असाधारण मनुष्य के मुख से सुनी थी। उन्होंने फरमाया कि लाहौर में एक बैरेस्टर रहता था जिन की खिदमात लाभ करने के लिए मुअक्कल लोग धन की थैलियां लेकर उनके पीछे पीछे फिरते थे। एक साढे छः फुट ऊंचा जाट जो बैल जैसी ताकत रखता था, धन की थैली लेकर वकील करने के लिए पहुंचा। उनके दफ्तर में पहले ही मुअक्कल इस कदर बैठे हुए थे, कि उसकी बारी नहीं आती थी, उसको मुन्शी ने कहा कि जब साहिब बहादुर आकर कोर्ट में जाने के लिए गाड़ी में बैठेगा, तब उनको मिलना। वकील साहिब जब बाहर आए तब जाट आगे बढ़ा और चन्द मिन्टों में अपनी बात बताई। और अपनी रुपयों की थैली उसको पकड़ाई। बात बात में उसको कह दिया, कि आप कैसे सौभाग्यवान हैं, आपके दरे दौलत पर हम लोग रुपयों की थैलियां लेकर पहुंचते हैं और आपको इतनी फुरसत भी नहीं कि हमसे सैकड़ों रुपए ले लें। यह शब्द सुनते ही वकील साहब बहुत दुख से भर गए। और उसको कहने लगे, सरदार साहिब आप मुझे अपनी सेहत दे दें, मैं तुम्हें अपनी सारी जायदाद लिखकर देता हूं। मेरी सेहत इस कदर बर्बाद हो चुकी है कि मैं एक फुलका भी नहीं खा सकता। धन मेरे किस काम का? सच है, जहां सेहत नहीं वहां सुख नहीं। सेहत को लेकर ही सुख है, सेहत को खोकर सुख किस काम का जायदाद किस काम की ?

इसी प्रकार एक दिन मैं डिप्टी कमिश्नर की कोर्ट में बैठा हुआ था तब उनको एक बहुत बड़ा मुसलमान मिलने के लिए आया। मैं यह देख्कार हैरान हो गया कि उसको उसके दो नौकर सहारा देकर ला रहे थे। ज्यों ही मैंने उसके चेहरे को देखा त्यों ही मैं और भी हैरान हो गया कि वह अन्धा है। डिप्टी कमिश्नर उससे हाथ मिला कर मिले, और उससे बातचीत की, और फिर वह उन्हीं दो नौकरों के सहारे चला गया। अब यह अन्धा अपनी आंखों से विहीन होकर किस कदर लाचार और दूसरों का मुहताज था। वह हर बात में ही दूसरों के रहम पर था। वह खुद भी ऐसा ही अनुभव करता था कि अगर उसको आंखें मिल जाएं, तो वह अपनी सारी जायदाद देने को तैयार था। इसी प्रकार मुझे एक बी. ए. एल. एल. बी. , बी. टी. मिला जो बहुत ऊंचा सुनता था। उसने एक बार मुझे बहुत दर्द भरे शब्दों में कहा, कि मैं इस अंग के कमजोर होने के कारण वकालत न कर सका, और बहुत सारी सूरतों में मेरी उन्नति बन्द हो गइ। इसलिए शारीरिक बोधों से वंचित होना कितना बड़ा घाटा!! इस शारीरिक दुनियां में स्वास्थयकर होना और सब अंगों और बोधों को ठीक हालात में पाना बहुत बड़ा सौभाग्य है।

शरीर को छोड़कर आत्मा के जगत में

उच्च बोधों से विहीन होना मनुष्य का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है। आत्मा में ज्ञान उत्पादक बोध शक्तियां और भाव शक्तियां मौजूद हैं। अगर यह शक्तियां निम्न अवस्था में हों, तो मनुष्य की आत्मिक अवस्था बहुत निम्न है, और अगर दोनों प्रकार की शक्तियां उन्नत अवस्था में हों, तो मनुष्य की आत्मिक अवस्था श्रेष्ठ दर्जे की है। इस भयानक युद्ध में इंग्लैण्ड ने चैम्बर लेन को खैरबाद कहके चर्चिल को क्यों उसका जानशीन बनाया? वह इसलिए क्यों कि चर्चिल अपनी ज्ञान शक्तियों के विचार से अपने हृदय के विशेष दिलेर भावों के विचार से अपनी सारी कौम की नज़रों में उनकी कौमी किश्ती का सच्चा मल्लाह बनने के योग्य था। इतना भी सच है, कि कौम की खिदमत में यह जनरैल अपनी सारी अपनत्व गारत करने की सामर्थ्य रखता था। चर्चिल की यह शानदार जिन्दगी क्या अपने कौम के लिए और क्या युद्ध में सारी दुनियां की रक्षा के लिए जहां तक विशेष प्रमाणित हुई, वहां तक चर्चिल का जीवन मुबारक है।

चर्चिल की यह सारी शानदार अवस्था उसका ध्यान अपनी सारी आत्मिक अवस्था की तरफ ले जाने के लिए कासिर है। वह हिटलर की चालों को जानता था, और उसको पसपा करने की सामर्थ्य रखता था, वह कई कौमों को अपने साथ मिलाकर दुश्मनों पर जय लाभ करने की सामर्थ्य रखता था। परन्तु वह यह सामर्थ्य नहीं रखता था, कि अपने आत्म अन्धकार और विकास का ज्ञान लाभ करे, और उन नीच भावों को आत्मिक अन्धता के भयानक रूप में देख और उपलब्ध कर सके। और उनसे सत्य मोक्ष लाभ करने की आकांक्षा कर सके। और इससे ऊपर सात्विक बोधों की विहीनता का घाटा बोध कर सके। और उनमें से कईयों को अपने हृदय में जाग्रत करने की सामर्थ्य रखे। इसीलिए अपनी कौम की बाहयक दुश्मनों से रक्षा करने की सामर्थ्य रखकर भी क्या अपने आत्मा और क्या अपनी कौम के बच्चों के आत्माओं को नीच राग और नीच घृणा रूपी आन्तरिक शत्रुओं से रक्षा नहीं कर सकता था। सारा मनुष्य मात्र ही यही सामर्थ्य नहीं रखता, इसलिए मिथ्या और पाप का राज जग में फैला हुआ है। इस प्रकार की सामर्थ्य एक मात्र सत्य देव भगवान देवात्मा में ही विकसित हुई है। इसलिए वही एक अकेले सारे मनुष्य मात्र के सत्य मोक्ष दाता और उच्च जीवन विकासकर्ता हैं। जो जन उनसे देव ज्योति और देव तेज पाते हैं, और लगातार पाते हैं, वह भी इस प्रकार की गैर मामूली सामर्थ्य अल्प या अधिक मात्रा में लाभ कर लेते हैं, और यह सामर्थ्य पाकर करामातें पैदा करनी शुरू कर देते हैं। श्रीमान देवत्व सिंह जी में यह सामर्थ्य बहुत अच्छी मात्रा में उत्पन्न हुई थी। वह आत्म बोधी होकर नाना आत्म रोगों से सत्य मोक्ष लाभ करने के योग्य हो गये, और यह सामर्थ्य पाकर और रखकर वह इस कदर सम्मान और श्रद्धा के पात्र हो गये कि सैकड़ों आत्मा उनके सम्बन्ध में श्रद्धावान होकर उनसे लाभ

उठाने के इच्छुक हो गये। आत्मा ही मनुष्य के अस्तित्व में मुख्य वस्तु है। उसके रक्षक सच्चे रक्षक अनुभव होने लगते हैं। इसलिए जिन जिनको कुछ न कुछ आत्म ज्ञान हो जाता है और कुछ न कुछ आत्म कल्याण का बोध हो जाता है, वह आत्म बोधियों के पीछे एक भिखारी की न्याई फिरते रहते हैं। श्री देवत्व सिंह जी की कीमत इस कदर क्यों बढ़ गई? वह इसलिए कि उनके हृदय में आत्मिक ज्ञान और आत्मिक कल्याण के उत्तम बोध उत्पन्न हो गये। बाकी यह सत्य तो डंके की चोट से प्रकाशित करता है कि जब मनुष्य के अस्तित्त्व में आत्मा ही मुख्य वस्तु है, तब आत्मिक रक्षा आत्मिक कल्याण के बोध ही हम सबके लिए शिरोमणीय बोध हैं। उन बोधों से अलग होना बहुत घटिया दर्जे का मनुष्य बनना है। और उन बोधों को लाभ करना ही अपनी असल कीमत और कदर को बढ़ाना है। काश कि हम इस सत्य को उपलब्ध कर सकें।

(**S.P. Kanal**)

एक अनोखा उपहार

कुछ दिनों से मुझे "देव वाणी के नोट" पढ़ने का सौभाग्य मिला है। पहले भी 2 - 3 बार तो अवश्य पढ़े हैं, परन्तु इस बार पढ़ते हुए माननीय श्रीमति सुशीला देवी की बहुत याद आई, जिन्होंने यह अनोखा उपहार हम तुच्छ जनों को भेंट किया। गुरू महाराज के चरणों में बड़े 2 महारथी रहे हैं, जिन्होंने उनके चरणों में रहने की याद के विषय में पुस्तक वा लेख लिखे हैं, परन्तु जिस प्रकार श्रीमति जी ने day to day की देव वाणी को नोट किया और उन्हें पहले देव समाज की हिन्दी पत्रिका में छपवाती रही, फिर सब एकत्र करके उन्हें एक पुस्तक छपवाई, उनका यह कदम बहुत ही श्रद्धा के योग्य और दिल के गहरे भावों से सराहने के योग्य है। उन्होंने इस क़दर इस पर मेहनत की है, फिर कर्ज़ा लेकर इस पुस्तक को छपवाया है, यह उनका बहुत बड़ा उपकार है।

नये धर्म सम्बन्धी इस विषय में नहीं जानते कि उस सुनहरी समय में समाज समस्त अर्पणकारी कर्मचारियों को जिनका कोई खाने पीने का साधन नहीं था, बहुत कम पैसे देती थी, तो वह अपनी जरूरतों को बहुत सीमित रखते थे। जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी होती थी, वह समाज से किसी प्रकार की सुविधा वा धन नहीं लेते थे। न कोई कर्मचारी यह समझता था कि हमने जीवन समर्पण किया है, तो सुख सुविधाएं समाज के पैसे से लेने का हमें हक है।

श्रीमति जी को देखने, उनके साथ समय बिताने, उनका अपने ग्रह में स्वागत करने का हमें सौभाग्य मिला है। उनमें सफाई, तरतीब और कड़ी मेहनत गुरू महाराज की कृपा से कूट कूट कर भरी हुई थी। बहुत बजुरग होकर भी अपना कमरा आप साफ करना, अपने कपड़े धोना, अर्थात जल्दी किए

वह किसी पर निर्भर नहीं होती। पूजनीय भगवान की इस शिक्षा को कि जहां तक हो सके अपना काम खुद करना चाहिए, उन्होंने पूरी तरह अपने जीवन में उतारा हुआ था।

देव वाणी के नोट में पढ़कर पता लगता है कि किस प्रकार वह अपनी किसी ग़ल्ती वा कमज़ारी को गुरू महाराज के आगे प्रकट करती थी और उनकी सहायता प्राप्त करती थी। इससे पूजनीय भगवान को बहुत खुशी मिलती थी।

बहुत छोटी उमर में वह गुरू महाराज के चरणों में आ गई और सारी उमर वफादार रहीं, अपनी पवित्रता पर आंच नहीं आने दी, उनके इस गुण के आगे झुके बिना नहीं रह सकते।

सोलन में हमने देखा है कि बूढ़ी उमर में अपने कमरे में झाड़ू लगाते, गुरू महाराज के निवास स्थान को साफ करते हुए और उनके आगे झुकते हुए, उनमें गुरू के लिए गजब की श्रद्धा थी। सोलन की एक सभा में बूढ़ी उमर में उन्होंने अपनी ग़ल्तियां रो रोकर बताई, बड़ा प्रभावदायक मण्डल पैदा हुआ।

उन्होंने किताब लिखने, महराज में मन्दिर बनाने और गुरू महाराज के विराजमान होते हुए भी और बाद में भी दूर दूर क्षेत्रों में प्रचार पर जाने का बहुत अधिक संग्राम किया है। महराज का मन्दिर भी अपने बलबूते पर बनवाया, उनकी यही कोशिश होती थी कि समाज का पैसा न लगे। कभी मन्दिर के लिए दरियां बनवाती, कभी दान मांगती, पूर्ण तपस्या का जीवन व्यतीत किया है। उनका जीवन बहुत प्रेरणादायक रहा है। जब भी हमारे पास आती तो हमें वा हमारे बच्चों को बहुत स्नेह करती थी। पिछले दिनों उनके जीवन को याद करके बहुत सम्मान पैदा होता रहा। यदि गुरू महाराज के चरणों में रहने वाले सारे जन उनके पवित्र मुख़ारबन्द से निकली हुई देव वाणी को इसी प्रकार नोट करते रहते, तो हम लोगों का बहुत भला हो सकता था। माननीय श्रीमती जी के चरणों में नतमस्तक हूं, जिन्होंने यह महान काम किया है।

एक तुच्छ सेविका
सुरजीत बराड़

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :- श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

एक मां के प्रति श्रद्धांजली
(8.4.2022)

आज 8 अप्रैल का वह दुखदाई दिन है, जब हमारे माता जी अर्थात माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी की माता जी और मेरी सास माता हमें अचानक छोड़कर चली गई। आज उन्हें स्वर्गवास हुए 54 वर्ष हो गए हैं, परन्तु उनकी याद क्या हम दोनों और क्या हमारे बच्चों में अभी भी जिन्दा है।

एक माता लड़की को जन्म देती है और दूसरी शादी के बाद उसे सास के रूप में मां मिलती है। मेरी मां ने बड़ी होने के नाते मुझे भरपूर प्यार दिया। शादी के बाद कुछ मेहरबानों के कारण कुछ शारीरिक रूप से दूरी हुई, परन्तु घृणा कभी नहीं हुई और वह ग़ल्तफहमियां दूर हुई तो वही प्यार भरा रिश्ता पनप गया। जहां मेरी मां ममता की मूर्ति थी मेरी सास माता ने मेरी अपनी मां की कमी को भरपूर पूरा किया।

माता जी जिस प्रकार शारीरिक रूप से बहुत सुन्दर व्यक्तित्व की मालिक थी, वैसे ही सुन्दर हृदय रखती थी। मेरी शादी से पहले श्रीमान जी गुरू मिशन में जीवन भेंट कर चुके थे, उन्होंने आर्मी में यहां अफसर बनने के मौके को Training में ही छोड़ दिया कि यदि मैं इस मार्ग पर पड़ा तो मैं गुरू का काम नहीं कर सकूंगा, उसके बाद गोनियाना मण्डी के सैक्रटरी के रूप में काम किया, कुछ देर बाद जब माता जी को कहा कि मैं नौकरी छोड़कर गुरू के मिशन में लगना चाहता हूं, तो उन्होंने न केवल कोई विघ्न नहीं डाला बल्कि यह कहा कि सोच ले, यदि कदम उठाया तो पीछे नहीं हटना और खुशी खुशी अपने सबसे योग्य बेटे को गुरू मिशन में लगने की आज्ञा दी। एक विधवा मां, जिसने कितनी कठिनाईयों में से गुज़रकर बच्चों को पाला हो, उसकी कितनी उम्मीदें होती है, उन्होंने कोई परवाह नहीं की। जब हमारी शादी हुई तो मुझे कहा कि अब मुझे कोई फिक़र नहीं मेरे बाद इसको तुम सम्भाल लोगी। मां कैसी अद्भुत होती है कि अपने मरने के बाद भी वह बच्चों का फिक़र करती है।

माता जी का जन्म एक बहुत सम्पन्न परिवार में हुआ था, परन्तु बदकिस्मती से उनके जन्म के समय ही उनकी मां का देहान्त हो गया और पिता इतने सन्तप्त हुए कि वह इंडिया छोड़कर बर्मा चले गए। माता जी का पालन पोषण उनके नाना के घर हुआ और 14 वर्ष की आयु में ही कल्याण गांव में उनकी शादी हो गई। 4 बच्चे हुए जिनकी परवरिश बहुत अच्छी की। खुशकिस्मती से उनके पति माननीय श्रीमान ईंद सिंह नम्बरदार जी देव समाज की संगत में आ चुके थे और कर्मचारी अकसर उनके घर में आया करते थे एक दिन माता जी दूध बिलो रही थी, कि एक माननीय

कर्मचारी जी ने कहा कि कुड़िए तू इतनी खूबसूरत है पढ़ जाए तो कितना अच्छा हो, माता जी वहीं दूध छोड़कर बैठ गई और कहा कि मैं तो अब भी तैयार हूँ आप नम्बरदार जी से पूछ लीजिए। नम्बरदार जी बहुत सूझवान सोच रखते थे, तभी उन्होंने 'हां' कर दी और माता जी चार बच्चों को लेकर पूहले चली गई। वहाँ देव समाज के स्कूल में माता जी और उनकी बड़ी बेटी पहली क्लास में इक्ट्ठी दाखिल हुई। माता जी ने मिडिल पास की फिर माननीय श्रीमान जी की भुआ जी के पास जाकर ट्रेंनिग ली और आख़िर उन्हें सरकारी नौकरी मिल गई। देव समाज के इतिहास में यह क़िश्में हुए हैं। माता जी नौजवानी में ही विधवा हो गई। फिर परिवार का सारा बोझ उनके कन्धों पर आ गया। नौकरी करना, जमीन हिस्से ठेके पर देना, बच्चे पालना, उन्हें शिक्षा दिलवाना, सारी ज़िम्मेवारियां बखूबी निभाई। सारे बच्चों ने अच्छी तालीम प्राप्त की, एक विधवा मां ने अपने बेटे (श्रीमान जी) के एक बार कहने पर अगर मैंने कालिज की पढ़ाई अच्छी जगह न की, तो मैं अच्छी शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकूंगा ग्रामीण ही रह जाऊंगा। उन्होंने फौरन उन्हें लाहौर जाने की इजाज़त दे दी और बड़े कालिज का खर्चा खुशी खुशी उठाया। सबसे बड़ी बात कि इतने आर्थिक बोझ के बावजूद उन्होंने अपनी ज़मीन को हाथ से नहीं जाने दिया। क्या सोच और बहादुरी थी, उसका हम अन्दाजा लगा सकते हैं।

माता जी में पैसे आदि का मोह नहीं था। उनके पिता जी की बहुत बड़ी जायदाद थी, शायद सैंकड़ों एकड़, जो उनके पिता के बाद लोगों ने ही खेती कर ली। जब उनके छोटे दामाद पोलिस अफसर बन गए तो उन्होंने कहा कि माता जी अब मैं आपको अपनी ज़मीन दिलवा सकता हूं, माता जी ने क्या शानदार जवाब दिया कि बेटा जो अब तक उस ज़मीन पर पलते आए हैं, मैं उनके मुंह से निवाला नहीं खो सकती। यदि मेरे बच्चे लायक होंगे तो बहुत बना लेंगे, यदि नलायक हुए तो यह भी गंवा देंगे, तो उनके दामाद चुप हो गए। माता जी ने अपने दम पर केवल बच्चों को पढ़ाया ही नहीं, बल्कि उनके बलबूते सारे बच्चे दुनियवी लिहाज़ से बहुत सम्पन्न हैं। इतने बड़े घर से होकर, उन्होंने सुसराल घर में बहुत मेहनत की, पर कभी शिकायत नहीं की।

वह सभाओं से बहुत लाभ उठाती थी, एक एक बार अपनी कमी को बताने में भी नहीं झिझकती थी। मुझे बहुत स्नेह दिया है। मुझे अपनी बेटियों से भी आगे रखा है। एक बार श्रीमान जी 2 देसी जूतियां लाए। माता जी ने झट से कहा कि पहले तू पसन्द कर ले, नहीं तो मेरी बेटी पहले ले जाएगी। कितनी सासें जो अपनी बेटी से पहले अपनी बहू को रखें। एक बार मेरी छोटी ननद अपनी नौकरी के सिलसिले में 3 - 4 महीने हमारे पास रही, जब उनके पति बिहार में बिजनेस Set कर रहे थे। वह स्कूल से आकर आराम करती रहती, माता जी

को यह बर्दाश्त नहीं हुआ, एक दिन कहते मै तो भटिंडे जा रही हूं, मुझसे नहीं देखा जाता कि मेरी बेटी आराम से पड़ी रहे और मेरी बहू काम करे और हमारे मना करने पर भी वह चली गई। किस कदर पक्षपात से ऊपर थी!

मेरे बच्चों को उन्होंने अथाह प्यार दिया है। मेरे बेटे को इतना विश्वास है कि जब प्रदेश में शुरू में मुझे कई समस्याएं आई, तो माता जी ने सदा मेरी सहायता की है। बड़े श्रीमान जी और माता जी ने पैर 2 पर मेरी रहनुमाई की है।

वक़्त की बहुत पाबन्द थी, कभी स्कूल से या सभा से लेट नहीं होती थी, कर्तव्य पालन में तो उनका कोई मुकाबला नहीं था। हमारा सम्बन्ध मां बेटी का ही रहा है। कभी भी कोई झगड़ा या मनमुटाव नहीं हुआ। यह सब देव समाज के वातावरण में प्रतिपालित होने का ही परिणाम है।

ऐसी महान माता के गर्भ से ही माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी जैसे सपुत्र का जन्म हुआ, जिन्होंने गुरू कारज करना अपना मिशन बनाया है। मुझे माता जी और उनके बेटे पर सदा गर्व रहा है और रहेगा। मेरी बहुत बड़ी खुशकिस्मती है जो मुझे ऐसे परिवार का हिस्सा बनने का सौभाग्य मिला है। मेरे बच्चे भी सदा ऐसी विरासत पर गर्व करते हैं।

एक उपकृत बेटी

सुरजीत बराड़

ईतवार की सभा

(3.4.2022)

हर ईतवार की तरह इस ईतवार को भी माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने अपने ग्रह में सभा करवाई।

उन्होंने पूछा कि धर्म क्या है? फिर धर्म की व्याख्या करते हुए फरमाया कि धर्म उच्च भावों का नाम है। जब तक मनुष्य के भीतर श्रद्धा, कृतज्ञता, दया, परसेवा, कर्तव्य पालन आदि भावों की उत्पत्ति नहीं होती, तब तक कोई जन धर्मवान नहीं बन सकता। यह धर्म भावों को दिखाने और बढ़ाने के लिए हमें जीवन दाता परम पूजनीय भगवान देवात्मा के साथ सम्बन्ध बनाने की आवश्यकता है। धर्म भावों के बिना मनुष्य नीच जीवन ही बसर करता है। गुरू महाराज की ज्योति हमें उच्च भावों की सुन्दरता और नीच जीवन की महा हानियों को दिखाती है। हमें सबसे प्यारी वस्तु हमारी जान है। जान के जाने से यह शरीर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। हम में से कोई मरना नहीं चाहता। यह जान ही आत्मा है। आत्मा को बचाने के लिए धर्म भावों की आवश्यकता है। उसके बाद उन्होंने भजन की उन सतरों की व्याख्या की कि गुरू से कटने से किस प्रकार जीवन का नाश होता है, इस अवस्था से बचना चाहिए। उसके बाद "देव वाणी" की पुस्तक से गुरू महाराज की देव वाणी का पाठ किया और उसकी व्याख़्या की। गुरू महाराज जी ने फरमाया है

:- ''जब तक हृदय के भीतर यह बोध पैदा न हो कि धर्म की ज़िंदगी के बिना मेरा कुछ भी नहीं, तब तक वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं, चाहे वह कोई राजा हो, चाहे महाराजा और चाहे कुछ और। क्योंकि धर्म से खाली जो जीवन है, वह जीवन केवल नीच रागों, नीच घृणाओं, अंधता और कठोरता का ही जीवन है और वह क्या उसके लिए और क्या जन समाज के लिए विनाशकारी है। बहुत थोड़े जन ऐसे हैं, जिन्हें यह बोध होता हो कि धर्मवान जन चाहे झोंपड़ी में रहता हो, चाहे फटे पुराने कपड़े रखता हो, वह हर हाल में धर्म से खाली जन से बेहतर है। काश! यह विवेक तुम में पैदा हो कि धर्मवान आत्मा और धर्मविहीन आत्मा दोनों एक नहीं हैं, वह पूर्णतः एक दूसरे से पृथक हैं। देवात्मा शरीर के विचार से रोगी होकर भी गहरी व्याकुलता के साथ तुम तक पहुंचते हैं और तुम्हें धर्म की महिमा दिखाना चाहते हैं, और यह धर्म लाभ के लिए धर्मदाता की आवश्यकता को दिखाते हैं, और यह रोशनी देते हैं कि इस दुनिया में धर्म और धर्मदाता से बढ़कर कुछ भी नहीं। इसलिए काश कि धर्म की प्राप्ति के लिए तुम में धर्मदाता के प्रति प्रीति का अंकुर पैदा हो। धर्म जीवन की प्राप्ति के लिए जिस त्याग की आवश्यकता है और बहुत बड़ी आवश्यकता है, वह त्याग करने के लिए तुम तैयार हो सको।

विद्वान बाप जैसे अपने मूर्ख बच्चे को देखकर दुखी होता है और चाहता है कि मेरा बच्चा भी विद्वान बन जावे, वैसे ही मैं तुम्हें धर्मविहीन देखकर अत्यंत दुखी होता हूं और बहुत व्याकुल होकर यह चाहता हूं कि तुम्हें किसी प्रकार धर्म की ज़िंदगी प्राप्त हो सके।

इसके बाद जलधर जी ने ब्यान किया कि मैंने देखा है कि जो गुरू महाराज से कटे हैं, उनका क्या हाल होता है। गुरू की कृपा से जीवन में ऐसी घटनाएं हो जाती है, जो कभी न हो सकती। उन्होंने बताया कि मैं टिकट बुक कराने के लिए रेलवे स्टेशन पर गया था, वहां लम्बी लाईन थी, और एक लड़का अपनी बूढ़ी मां को लेकर लाईन में खड़ा था, उसकी गाड़ी चलने में बहुत कम समय रह गया था और वह सबकी मिन्नतें कर रहा था की मुझे टिकट लेने दो, मेरी गाड़ी छूट जाएगी, परन्तु कोई टस से मस नहीं हो रहा था। मैं पकड़ कर उन्हें आगे ले गया और बिनती की कि मेहरबानी करके उसे टिकट लेने दो इसकी गाड़ी छूट जाएगी, परन्तु मेरे यह कहने पर कि मैं सबसे पीछे चला जाऊंगा, पर इसे आगे कर दो, फिर उन्होंने मेरी request मानी और लड़के ने जब टिकट ले ली, तो बहुत धन्यवाद किया। परन्तु मैं गुरू महाराज का धन्यवाद कर रहा था कि जिनकी कृपा से मैं छोटी सी अच्छी गति कर सका, नहीं तो मैं भी इनकी तरह ही खड़ा रहना था।

उसके बाद सुरजीत जी ने एक परिवार की स्वार्थ की गति का वर्णन किया। बहुत अच्छा वातावरण बना।

एक हाजरीन

भृत्य स्वामी के सम्बन्ध में

नेचर के चारों जगतों पर हम निर्भर हैं, जहां पृथ्वी, सूर्य, हवा हमारे लिए जान और प्राण हैं, पौधों से आक्सीजन वा अन्य पदार्थ हम प्रति पल प्रयोग में लाते हैं। पशु तो हमारे पूर्वज हैं, उनके द्वारा उपजे अन्न, उनसे प्राप्त दूध और अन्य वस्तुएं हम प्रतिदिन इस्तेमाल करते हैं, इसी प्रकार चौथा जगत मनुष्य जगत है। इसी से हमारी उत्पत्ति, पालना और रक्षा हुई है। किन-किन क्षेत्रों में मनुष्य जगत हमारी सेवा करता है, यदि उसको याद करने लगें तो इसकी लड़ी समाप्त नहीं होती।

परम पूजनीय भगवान ने चारों जगतों के सम्बन्ध 16 यज्ञ साधन रखे हैं, जिसमें भृत्य स्वामी अर्थात महतायत, काम करने वाले और मालिक का सम्बंध भी महत्त्वपूर्ण लिखा है। कोई बड़ी नौकरी करता है या सहायक है, सबके लिए कर्तव्य कर्मों वा वर्जित कर्मों के आदेश हैं। उन आदेशों के शीशे में हम अपने सम्बन्ध को परख सकते हैं।

सर्व प्रथम पूजनीय भगवान ने "सम्बन्ध अनुभव" के विषय में लिखा है कि प्रत्येक भृत्य अपने मालिक के साथ धर्म मूलक सम्बन्ध अनुभव करे, उनमें सम्बन्ध नीच गति से मुक्त रहे, उचित सम्मान प्रदर्शन करे, उचित आज्ञाओं का पालन करें, अविज्ञा होने पर क्षमा प्रार्थना करे। अपने मालिक की सुरक्षा करे, अनुचित हस्तक्षेप न करे, अपने स्वामी की किसी पाप मूलक क्रिया में भागीदारी न बने।

इसी प्रकार मालिक के लिए आवश्यक आदेश है, वह भी अपने भृत्य के साथ सच्चा सम्बन्ध अनुभव करे, अपने आपको प्रत्येक नीच गति से मुक्त रखे। अपने सेवाकारियों का उचित सम्मान करे। ग़ल्ती होने पर कठोर दण्ड न दे, छोटी-2 अविज्ञाओं को क्षमा करे। यहाँ तक हो सके अपने भृत्य से असमय पर काम न ले, उसकी योग्यता से बढ़कर काम न लें, प्रत्येक स्वामी के लिए आवश्यक है, अपने भृत्य की जो भलाई कर सकता हो, वह भलाई करे, उसके उचित अधिकार में हस्तक्षेप न करे। यह परम पूजनीय भगवान देवात्मा के आदेशों का कुछ संक्षेप सार है, बाकी हम विस्तार से पूजनीय देव शास्त्र चौथे खण्ड में पढ़ सकते हैं।

यह गुरू महाराज की अद्वितीय शिक्षा है जो एक छोटी 2 सेवा करने वालों के प्रति भी हमारे कर्तव्यों को इतना महत्त्व दिया है। यदि हम विचार करें कि यह हमारे सहायक हमारे जीवन को कितना सुविधाजनक बनाते हैं, चाहे वह खेतों में काम करने वाले हों या, घरों में हमारे सहायक हों या किसी संस्थाओं में, हमें उनका महत्त्व तब समझ आता है, जब वह छोड़ जाते हैं उन्हें तो मजबूरी से सेवा सन्मान भी दिखाना पड़ता है और आज्ञा का भी पालन करना पड़ता है, भूखे पेट का सवाल है। परन्तु मजबूरी में किया काम अच्छा सम्बन्ध नहीं बना सकता।

पहले तो जो जहां भी मालिक है, उसे शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि उसे सहायक मिले हैं, चाहे वेतन हम देते हैं, परन्तु कल्पना करो कि उनके स्थान पर हमें किसी के बर्तन साफ करने पड़े, झाड़ू पोचा वा अन्य कहलाने वाले छोटे काम हमें करने पड़े तो हम अपने मालिक से क्या आशा रखेंगे। अपने आपको अपने सहायक के स्थान पर रखकर सोचने से आपको समझ आ सकता है कि आपको कैसा मालिक बनना चाहिए।

कुछ ऐसे नुस्खें हैं, जो मालिक - नौकर से सम्बन्ध को बहुत मधुर बना सकते हैं : -

1. सर्वप्रथम जैसे मैंने लिखा है, अपने आपको उसके स्थान पर रखकर देखें।
2. अपने सहायक को इन्सान समझें, अपना गुलाम न समझें।
3. अपने सहायक के काम के अनुसार उचित वेतन दें, कुछ अधिक ही दें, तो फिर उसके काम की रफ्तार भी बढ़ जाएगी।
4. अपने सहायक को उसकी शारीरिक योग्यता के अनुसार काम दें। यदि किसी दुबले पतले आदमी से आप सख़्त काम लेंगे, तो वह जल्दी भाग जाएगा।
5. अपने सेवाकारियों को दिन में कम से कम 2 - 3 घण्टे का विश्राम दें, इससे वह तरोताज़ा हो जाते हैं।
6. हर वर्ष उनका वेतन बढ़ाएं ताकि मंहगाई उन्हें मार न गिराए। आजकल महंगाई ज़्यादा है, बाहर से आकर काम करने वालों को कुछ राशन देकर या बच्चों की फीस आदि देकर उनकी मदद कर सकते हैं।
7. जो आपके घर में रहने वाले हैं, उनके बिस्तरे, रजाईयां साफ और काफी हों, उनको Check करते रहना चाहिए, गर्मी में उनके कमरों में कम से कम पंखा तो हो ही, कूलर भी अवश्य लगा दें। जब आप ठण्ड में पड़ेंगे और वह लोग गर्मी में सोएंगे, तो यह उनको नागवार गुजरेगा, इसका प्रभाव उनके व्यवहार पर पड़ेगा।
8. वेतन समय पर दें, इसलिए रोक कर न रखें कि वह भाग जाएगा, हां उससे बात कर लें, जब भी आप जाना चाहें खुशी से जाएं, परन्तु हमें कम से कम 1 महीना पहले बता दें। यदि आपका व्यवहार अच्छा होगा तो वह अवश्य बताएंगे। मेरा तो तजुरबा है कि केवल एक 2 सहायक ने बताया ही नहीं बल्कि तब तक रुका रहा, जब तक हमारा प्रबन्ध नहीं हुआ।
9. त्यौहारों पर उन्हें रुपये देकर या उपहार देकर उनकी खुशी को बढ़ाएं। कई बार वह हक से कह देंगे नहीं हमें और पैसे दो। घर में अपने बच्चों की तरह उनको अपना हक़ जताने दें, यह उनके लिए बहुत सन्मान है।
10. बोलने में अपनी टोन को सुधारें। टोकने के लिए भी नर्म शब्दों का प्रयोग करें। वह आपका सहायक है, गुलाम नहीं, उसके आत्म सन्मान को ठेस न पहुँचाएं।

प्यार से भी वह बात समझाई जा सकती है।

11. कोई ग़ल्ती होने, पर कुछ टूट जाने पर, आपके यह कहने पर कि कोई बात नहीं, आगे से सावधानी से काम करना, हम सब से ग़ल्तियां होती हैं, सबसे चीज़े टूट जाती हैं, तो वह भी इन्सान हैं। मैंने तो खुद देखा है कि मेरे से शीशे का गिलास जल्दी टूट जाता है, इसलिए सहनशीलता बढ़ाएं। यह सबसे बड़ा गुण है, जो आपके रिश्ते को अपने सहायक के साथ मजबूत बनाता है।
12. अपने सहायक की सेहत का भी फिक्र रखें। बीमार होने पर उसकी दवाई देने, Check up करवाने और आराम देने का ख़्याल रखें। यदि आप में सहायक रखने की हैसियत है, तो कुछ न कुछ धन आप उस पर अवश्य खर्च करें।
13. अगर उसे किसी मुसीबत के समय उधार चाहिए तो अपनी हैसियत के अनुसार अवश्य दें और यह सोचकर दें कि यदि वह धन वापिस न भी आए, तो आप दुखी नहीं होंगे। मेरी व्यक्तिगत अनुभव है कि मैंने अपने सहायकों को कई बार कितनी कितनी रक्म दी, सबने वापिस की है।
14. परम पूजनीय भगवान की शिक्षा के अनुसार साल में इन दिनों में विशेष रूप से उनके गले में हार डालकर, उन्हें कुछ उपहार देकर, उन्हें अच्छा भोजन खिलाकर, इस दिन को मनाएं, इससे उनको जो सन्मान मिलता है, अपने गुणों का बख़ान सुनकर जो उन्हें उत्साह मिलता हैं, जो खुशी मिलती है, उसका ब्यान नहीं हो सकता, वह औरों को बताते हैं कि देखो इनका समाज हमारा सन्मान करवाती है और वह धन्य धन्य अनुभव करते हैं, हम हर साल इस दिन को मनाते हैं, आप लोगों से भी आग्रह है कि आप ऐसा करें ताकि गुरू महाराज की शिक्षा को हम सार्थक कर सकें।

– सुरजीत बराड़

बाकि पृष्ठ 20

जरूरत है, ताकि वे नेकी के मार्ग पर चलें।

दूसरी बात धार्मिक आध्यात्मिकता की थी। हर धर्म में इंसानी मूल्य सिखाए जाएं, जिनके जरिए बेहतर जीवन और समाज का कल्याण प्रोत्साहित हो सके।

इन दोनों प्रेरणाओं को हमें अपना मिशन बनाना होगा। इस मिशन को पूरा करने के लिए हम महर्षि पतंजलि से भी प्रेरणा ले सकते हैं, जिन्होंने 2500 वर्ष पहले कहा था, 'जब आप किसी महान उद्देश्य से प्रेरित होते हैं, तो आपके विचार अपने सारे बंधनों को तोड़ देते हैं। आपका मन सीमाओं के परे चला जाता है। आपकी चेतना हर दिशा में फैल जाती है और आप खुद को एक नई, महान और शानदार दुनिया में पाते हैं। आपके अंदर सुसुप्त ताकतें और हुनर जाग जाते हैं और आप पाते हैं कि आप इतने महान व्यक्ति बन चुके हैं, जिसकी कल्पना आपने सपनों में भी नहीं की थी।'

दिल में नेकी होती है, तो चरित्र खूबसूरत बनता है। जब चरित्र खूबसूरत होता है, तो घर में एकता और तालमेल बढ़ता है। जब घर में यह सामंजस्य होता है, तो देश में व्यवस्था और शांति रहती है।

शुभ संग्राम

मल्लेका में 19 मार्च से 22 मार्च तक सत्संग रखा गया। पति पत्नी के विषय में विशेष दिन भी मनाया गया।

पहली सभा : 19.3.2022 शाम- सभापति श्रीमान राधेश्याम जी। :- सर्वप्रथम इस सत्संग में आने वालों का स्वागत किया। फिर भजन और देव स्त्रोत का गान और व्याख्या की गई। सभापति जी ने बताया कि जैसे शिक्षा के महत्त्व को मनुष्य नहीं जानते थे, उसी प्रकार अब सच्चे धर्म के बारे में अनभिज्ञ हैं। परन्तु अब शिक्षा के महत्त्व की तो समझ आई है, परन्तु जो सत्य धर्म की शिक्षा गुरू महाराज ने दी है, उसकी कोई समझ नहीं। ईश्वर को ढूंढने में ही लाखों वर्ष लगा दिए, परन्तु नेचर के अटल नियमों को नहीं जाना, उसके जाने बिना सच्चे धर्म का ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। परम पूजनीय भगवान की शिक्षा नेचर के अटल नियमों पर आधारित है। उन्होंने फरमाया है कि मनुष्य सुख अनुरागी है। सुख और दुःख के अलग नियम हैं। हमारी विरासत में अधिकतर नीच भावों की पूंजी मिली है। जब हमारे सुख पर चोट लगती है, हमें गुस्सा आता है। देवात्मा जन्मकाल से ही हित और शुभ अनुराग लेकर पैदा हुए हैं। सभापति जी ने नीच भावों अर्थात, स्वार्थ, घृणा, घमण्ड, स्वेच्छाचारिता मोटे 2 भावों का ज़िकर किया - उच्च भाव जैसे श्रद्धा, कृतज्ञता, दया, हानि परिशोध के विषय में बताया। देवात्मा गुरू में ही ऐसी रोशनी है जो हमें नीच भावों से मुक्ति और उच्च भाव पैदा करने की सामर्थ्य देती है।

उन्होंने एक नौकर की घटना बताई, जिसने सभा में शामिल होकर अपनी बेईमानी को अनुभव किया, उसने सेठ से क्षमा मांगी कि वह उनके गल्ले से पैसे निकाल लेता था, और उसने पैसे वापिस किए। गुरू महाराज के प्रभाव ऐसी करामात करते हैं। गुरू महराज ने सब सम्बन्धों में 16 त्यौहार दिए हैं। इन प्रभावों में आकर ही नाम लेकर बुलाने वाले पति अपनी पत्नी को श्रीमति जी कहने लगे हैं। देवात्मा हमारे सम्बन्धों को स्वर्गीय बनाते हैं।

20 तारीख़ सुबह 9.00 बजे, सभापति : श्रीमान राधे श्याम जी।

"काम होगा आपका, तो आपके प्रभावों से, नाश होगा पाप का, तो आपके प्रभावों से।"

यह कहकर उन्होंने बताया कि दुनिया के अन्दर 40,000 के लगभग धर्म हैं। गुरूद्वारों में सेवा का काम होता है। गुरू महाराज के द्वारा स्थापित धर्म के प्रभाव हमें ऐसा इंजैक्शन लगाते हैं कि एक 2 सभा में हमारे जीवनों में उच्च परिवर्तन आ जाता है। हम चारों जगतों से जुड़े हुए हैं। उन जगतों के सम्बन्ध में हितकर गतियां करने से धर्म आता है। पति पत्नी का सम्बन्ध उच्च आदर्शो को लेकर होना चाहिए। एक दूसरे के प्रति सन्मान, जिम्मेवारी

वफादारी, मीठा व्यवहार ही इस सम्बन्ध में धर्म है। एक जन की नई 2 शादी हुई थी, पत्नी पति के जन्मदिन का तोहफा लेने के लिए साथ वाले घर में नौकर को तोहफा लाने के लिए कह रही थी, परन्तु पति को यह सहन नहीं हुआ, बिना किसी सबूत के संशय करना सम्बन्ध तोड़ देता है।

सभापति जी ने बताया कि मैं पहले रिश्वत लेता था, इन प्रभावों में आकर रिश्वत छोड़ दी, मेरी श्रीमति जी ने सिलाई करके मेरा साथ दिया। यह प्रभाव क्रूर और घमण्डी पतियों के पत्नियां के चरणों में सिर रखवकर क्षमा मांगने के लिए मजबूर कर देते हैं।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने सभापति जी का आभार प्रगट किया और अपनी पत्नी के विषय में अपने भावों का प्रकाश किया।

20.03.2022 शाम 5.00 बजे : सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। :- उन्होंने बताया कि नेचर के नियम सब वैज्ञानिकों के लिए एक हैं। मच्छर काटने से मलेरिया होता है, धरती, हर वस्तु को अपनी ओर खींचती है, स्प्रे करने से फसलें बचती हैं, यह विश्वव्यापी तत्त्व हैं। इन्सानियत के लिए धर्म भी एक है। रिश्वत लेकर कोई जन धर्मवान नहीं हो सकता, चाहे वह किसी धर्म को मानता हो। सब जगतों के प्रति उच्च व्यवहार हमें धर्मवान बनाते हैं। किसी का हित करने से धर्म आता है। पति पत्नी का सम्बन्ध बहुत निकटता का सम्बन्ध है, उसमें हम अपने व्यवहारों से ही धर्मवान बन सकते हैं। इसके ईलावा और सम्बन्धों में भी कई घटनाएं बताई।

श्रीमान सरताज जी ने बताया कि श्रद्धेय कनल जी ने विवाहित जीवन के विषय में बताया है कि "मैं अपनी पत्नी को सन्मान देने में कभी पीछे नहीं हटूंगा।

श्रीमान रामचन्द्र जी ने अपनी पत्नी के साथ दुर्व्यवहार की पुरानी घटना बताई और क्षमा मांगी। फिर उन्होंने धर्म सम्बन्धियों द्वारा बताए गए नुसखें अर्थात आँखों पर छींटे मारना, सैर करना, सुबह उठकर 2 - 3 गिलास पानी पीना इससे मेरी सेहत बिल्कुल ठीक हो गई हैं।

21.3.2022, सुबह, सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी :- उन्होंने बताया कि जो जीवन हम जी रहे हैं, धर्मों में इसको जंजाल कहा जाता है। परन्तु गुरू महाराज ने फरमाया कि तुम्हारा जीवन सम्बन्धों में है। परन्तु मनुष्य के जीवन में सुख अनुराग प्रधान हैं। सुख अनुराग सम्बन्धों में दुख पैदा करते हैं। हम हर अच्छी और बुरी क्रिया सम्बन्धों में करते हैं। पति पत्नी के सम्बन्ध में श्रद्धेय कनल जी ने लिखा है कि पति पत्नी के आपस के सम्बन्ध में सन्मान प्यार से अधिक महत्त्व रखता है। उन्होंने इस विषय में बहुत सी घटनाओं का वर्णन किया सब घटनाएं बहुत ही प्रभावदायक थी।

21.3.2022, शाम 5.00 बजे। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। :- मनुष्य को

जिस भले में सुख मिलता, वह करता है, यदि पाप करने में सुख मिलता है, तो वह पाप करने से भी पीछे नहीं हटता। हमारी समाज में आर्थिक, मान्सिक और अध्यात्मिक विकास होता है। लेकिन अपना भला करने के लिए उच्च भावों की आवश्यकता है। ईब्राहिम लिंकन ने गुलामी को दूर किया। विद्यासागर जी ने स्त्रियों के प्रति अन्याय को दूर किया और उच्च भावों के बहुत से उदाहरण दिए। श्रद्धेय पी.वी. कनल जी M.A. L.L.B होकर और कालिज के प्रिंसीपल होकर बच्चों के मेज साफ करते, उनके लिए पानी भरकर रखते, गरीब लड़कों की सहायता करते थे। किसी विद्यार्थी पर कोई सख्ती हो जाती तो उनके घर में जाकर मुआफी मांगी। उच्च भावों से ऐसे दृश्य पैदा होते हैं। इस प्रकार बड़ा सुन्दर मण्डल बना।

23.3.2022 : सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। :- उन्होंने नेचर का रूप बताया कि नेचर को किसी ने नहीं बनाया, वह सदा से है और सदा रहेगी। दूसरा नियम है कि नेचर में प्रत्येक पदार्थ परिवर्तित होता है। कोई विकास पा रहा है, कोई विनाश को प्राप्त हो रहा है। नेचर में किसी को क्षमा नहीं। हर अच्छी बुरी क्रिया का अच्छा वा बुरा परिणाम है। यदि हमने नेचर के नियमों को जान लिया, तो हमे इस संगत से लाभ उठा सकते हैं।

उसके बाद उन्होंने पति-पत्नी के सम्बन्ध को लेकर ब्यान किया कि कैसे अपनी पत्नियों पर अन्याय करने वाले अहंकारी पति पत्नियों से क्षमा याचना करने वाले बन गए। श्रीमान नौध सिंह जी के परिशोध की घटनाएं बताई। श्रीमान राम सिंह जी जिन्होंने छोटी सी-हानि होने पर अपनी पत्नी को मार मारकर पसल्ली तोड़ दी, उनसे न केवल क्षमा याचना करवाई बल्कि पत्नी को कन्धे पर उठा उठाकर उनका ईलाज करवाया, एक अन्यायकारी पति इस क़दर पत्नी का सेवा करने वाला बन गया कि दूसरों के लिए एक उदाहरण पेश कर गया। सभा इतनी प्रभावशाली थी कि श्रीमान सरताज सिंह जी ने सभा में खड़े होकर, हाथ जोड़कर सबके सामने अपनी पत्नी से क्षमा मांगी। यह बहुत सुन्दर दृश्य था।

श्रीमान ज्ञान चन्द जी ने घर में जाकर अपनी धर्म पत्नी से क्षमा मांगी।

भगवान देवात्मा के प्रभाव इस क़दर व्यवहारों को बदल देते हैं।

एक सभा दुपहिर के 2 बजे सुखदेव जी के घर में की गई, उनके नव विवाहित पुत्र और पुत्रवधु को सार्थक जीवन इक्ट्ठे बताने के नियम बताए गए। बहुत अच्छा मण्डल बना। इस सभा में लगभग अपने परिवारों के 22 के लगभग जन शामिल थे, नहीं तो सब सभाओं में 50 तक हाज़री रही। 5780 रूपये दान मिला। श्रीमान जी ने 220 रूपये डालकर इसे 6000 हज़ार कर दिया सारा संग्राम किसी सीमा तक सफल रहा।

- एक हाजरीन

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

नेकी ही घर, देश और दुनिया को एक बनाएगी

मुझे हमेशा लगता है कि जब हम अपने जीवन में किसी को कुछ दे पाते हैं, तो वही हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि होती है। फिर वह ज्ञान हो या फिर आप किसी को अपनी सेवाएं दे रहे हों। या किसी के लिए कुछ अच्छे शब्द ही क्यों न कह रहे हों। अगर आप किसी की जिंदगी को बेहतर बना सकते हैं, उसकी ज़िंदगी में खुशी ला सकते हैं, तो यह सबसे अच्छा कार्य है, जो एक इंसान कर सकता है। इससे बेहतर कुछ भी नहीं है। जब सभी ऐसा करेंगे तो दुनिया से संघर्ष खत्म हो जाएंगे।

मैं अक्सर कहा करता हूं कि जब दिल में नेकी होती है, तो चरित्र खूबसूरत बनता है। जब चरित्र खूसूरत होता है, तो घर में एकता और तालमेल बढ़ता है। जब घर में यह सामंजस्य होता है, तो देश में व्यवस्था और शांति रहती है। जब देश में शांति रहती है, तो पूरे विश्व में शांति स्थापित होती है। यह पूरे विश्व के लिए सही है। हमें देश व्यवस्था और शांति तथा घर में सामंजस्य की ही जरूरत है।

हमें इस धरती को खुश, समृद्ध और शांतिपूर्ण समाज देने की दिशा में काम करना चाहिए। ऐसा करने में शिक्षा, धार्मिक आध्यात्मिकता और आर्थिक विकास, तीनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। हमने देखा कि विश्व में शांति और खुशी के बीज नेकी में है। नेक नागरिक की प्रबुद्ध समाज का निर्माण कर सकते हैं। हमें यह नेकी अपनी बच्चों के मन में स्थापित करनी होगी। पाँच से 17 साल की उम्र में उन्हें यह मूल्य देना हमारा मिशन होना चाहिए। इससे मुझे एक ग्रीक कहावत याद आती है, 'मुझे सात साल के लिए एक बच्चा दें, उसके बाद उस बच्चे को ईश्वर को दे दें या शैतान को। वे उस बच्चे को बदल नहीं पाएंगें। यह शिक्षा और बच्चों के मन, दोनों की शक्ति बताता है।

मुझे याद है, जब मैं सेंट जोसेफ कॉलेज, तिरुतिरापल्ली में पढ़ता था, तब वहां मेरे शिक्षक रेव फादर रेक्टर कलाथिल हर सोमवार एक विशेष कक्षा लेते थें। इस कक्षा में वे हमसे अच्छे इंसानों के वर्तमान और अतीत के बारे में बताते थे। साथ ही बताते थे कि एक अच्छा इंसान कैसे बना जाए। वे हमें बुद्ध, कंफ्यूशियस, अब्राहम लिंकन, महात्मा गांधी, आईस्टीन आदि के बारे में और हमारी विरासत के बारे में बताया करते थे। वे बताते थे कि महान शख्सियतें, अच्छा इंसान कैसे बनीं। भले ही वे लेक्चर मुझे 1950 के दशक में दिए गए थे, लेकिन वे मुझे आज भी प्रेरित करते है। ऐसी ही प्रेरणा हमें अपने बच्चों को देने की

शेष पृष्ठ 16

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री- **Dev Samaj Global**, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts